किशिनचंद चेलाराम महाविद्यालय, मुंबई के विद्यार्थियों का

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान भ्रमण दिनाँक 7/11/2016

किशिनचंद चेलाराम महाविद्यालय, मुंबई कॉलेज के 56 विद्यार्थियों ने दिनांक 7/11/2016 को श्रीमती जया इसरानी, प्रभागाध्यक्ष, सूक्ष्म जीव विज्ञान एवं जैव प्रोद्योगिकी (Microbiology and Biotechnology) के नेतृत्व में 5 अन्य संकाय सदस्यों के साथ शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर का शैक्षणिक भ्रमण किया। भ्रमण के प्रारम्भ में संस्थान के कॉन्फ्रेंस हॉल में वन आनुवांशिकी एवं वृक्ष प्रजनन प्रभाग के वैज्ञानिकों द्वारा इन विद्यार्थियों को सम्बोधित किया गया । परस्पर संवाद का प्रारम्भ प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष डॉ. यू.के.तोमर के उद्बोधन से हुआ, जिसमें उन्होंने वृक्ष प्रजनन की अवधारणा एवं इसके महत्व के बारे में विद्यार्थियों को बताया । उन्होंने विद्यार्थियों को वृक्ष सुधार की दिशा में संस्थान द्वारा की जा रही प्रमुख गतिविधियों जैसे रोपण सामग्री सुधार कार्यक्रम (PSIP), संवर्धन तकनीक, प्रजनन जीव विज्ञान तथा जैव प्रौद्यौगिकी से संबंधित पहलुओं के बारे में संक्षिप्त में बताया। इसी कड़ी में डॉ. आई.डी. आर्य ने विद्यार्थियों को जैवप्रोद्योगिकी के उपकरण एवं विधियों, खासकर ऊत्तक संवर्धन प्रोद्योगिकी के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने विद्यार्थियों को सूक्ष्म प्रवर्धन के लाभ खासकर क्लोनल वानिकी एवं वृक्ष सुधार कार्यक्रम में इसकी भूमिका के बारे में बताया। इसके बाद डॉ. तरूण कान्त ने विद्यार्थियों को आणविक जीव विज्ञान व जैव सूचना प्रौद्योगिकी की विधियों एवं इनके जैवविज्ञान में विस्तृत उपयोगों के बारे में बताया । उन्होंने यह भी बताया कि किस प्रकार शुष्क वन अनुसंधान संस्थान में लवणता आधारित समस्याओं में कुछ खास जीन्स के महत्व को समझने की कोशिश की जा रही है। उन्होंने सभी को शुष्क वन अनुसंधान संस्थान द्वारा पहचाने गए 9 प्यूटेटिव जीन्स (Putative Genes) एवं ट्रांसजीनिक

तकनीक (Transgenic Technique) का उपयोग कर वृक्ष सुधार हेतु संस्थान की भावी योजनाओं की भी जानकारी दी । के.सी. कॉलेज, महाराष्ट् के प्रभागाध्यक्ष ने सभी वैज्ञानिकों का धन्यवाद ज्ञापन किया ।

इसके बाद विद्यार्थियों ने संस्थान के विस्तार एवं निर्वचन केन्द्र का भ्रमण कर पोस्टर इत्यादि के माध्यम से संस्थान की अनुसंधान संबंधित सूचनाओं तथा सामग्री का अवलोकन किया । कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी, भा.व.से. ने विद्यार्थियों को अवक्रमित पहाड़ियों का पुनर्वासन (Restoration of degraded hills), टिब्बा स्थिरीकरण (Sand dune stabilization), जल प्लावित भूमि का पुनर्वासन (Restoration of water logged areas), कृषि वानिकी (Agroforestry) इत्यादि अनुसंधान गतिविधियों की जानकारी दी तथा विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए पेड़ों से होने वाले परोक्ष एवं अपरोक्ष लाभों की जानकारी दी तथा वर्तमान पर्यावरणीय परिस्थितियों की चर्चा करते हुए पोलीथीन के दुष्प्रभाव का भी जिक्र किया। इसके बाद विद्यार्थियों ने वन आनुवंशिक एवं वृक्ष प्रजनन प्रभाग की प्रयोगशालाओं का भी भ्रमण किया । जहाँ उन्हें ऊतक संवर्धन की तकनीकें एवं विधि समझाई गई । विद्यार्थियों को नीम, मोरिंगा, कैर, बाँस की विभिन्न प्रजातियों के कल्चर भी दिखाए गए । साथ ही विद्यार्थियों ने प्रभाग की विभिन्न प्रयोगशालाओं, इनोकुलेशन चैम्बर, ग्रोथ चैम्बर (वृद्धि कक्ष), मीडिया कक्ष, प्रीप्रेशन कक्ष आदि का भी भ्रमण किया ।

भ्रमण कार्यक्रम का समन्वयन श्रीमती मीता सिंह तोमर, तकनीकी सहायक ने किया ।

RESTORATION OF WATERLOGGED AREA THROUGH BIO DRAINAGE

RESTORATION OF WATERLOGGED AREA THROUGH BIO DRAINAGE